भा. कृ. अनु. प.-केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान,

क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र, भरूच

बारा क्षेत्र के साधनहीन अनुसूचित जाति किसानों को "प्रशिक्षण तथा कृषि सामग्री वितरण"

आईसीएआर-सीएसएसआरआई, क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र, भरूच द्वारा अनुसूचित जाति के किसानों को वैज्ञानिक तरीके से फसल उत्पादन लेने के लिए प्रशिक्षण तथा कृषि सामग्री जैसे लवण सहनशील गेंहूँ की किस्म (KRL-210 तथा KRL 283) का बीज, उर्वरक (डीएपी, यूरिया, जिंक सल्फेट) जैविक तरल खाद तथा कीटनाशक का वितरण किया गया। यह कार्यक्रम अनुसूचित जाति परियोजना के अंतर्गत 21 नवम्बर, 2025 को केंद्र के समनी प्रायोगिक फार्म में आयोजित किया गया। भरूच जिले के चार तालुकाओं (जम्बूसर, वाघरा, भरूच तथा आमोद) के 27 गांवों (कावा, डाभा, कावली, मोटा अमनपूरा, सारोद, अणखी, छिद्रा, करमाड, भोदर, वड, जामडी, मोलपुर, समनी, बुवा, तनछा, घमनाद, रोंद, केसलू, नाहियेर, कुरचन, वाघरा, ओरा, खोजबल, त्रांकल, गंधार, अकोट, कारेला) के अनुसूचित जाति के 50 किसानों ने इस कार्यक्रम में सहभागिता की। परीक्षण के लिए किसानों को एक एकड़ क्षेत्र के लिए 40 किलोग्राम गेंहू का बीज, 50 किलोग्राम डीएपी, 90 किलोग्राम यूरिया, 8 किलोग्राम जिंक सल्फेट, कीटनाशक तथा नवसारी कृषि विश्विद्यालय द्वारा बनाया गया केले के तने से बना हुआ जैविक तरल उर्वरक "नोवेल" भी किसानों को वितरित किया गया । तीन गाँव के 15 किसानों को गेंहूँ की किस्म (KRL-210) प्रदान की गयी तथा बाकी 35 किसानों को गेंहूँ की किस्म (KRL 283) वितरित की गयी| अनुसूचित जाति के किसानों से आधार कार्ड, अनुसूचित जाति प्रमाण पत्र की फोटोकॉपी और मोबाइल नंबर और हस्ताक्षर लिए गए। सर्वप्रथम केंद्र के अध्यक्ष डा. अनिल चिंचमलातपुरे के द्वारा किसानों को 'अनुसूचित जाति सब प्लान' कार्यक्रम का उद्देश्य समझाया गया तथा संस्थान के कार्यकलापों के बारे में जानकारी दी गयी। इसके पश्चात् डॉ. मोनिका शुक्ला उनके द्वारा गेहूं की वैज्ञानिक खेती के बारे में प्रशिक्षण दिया गया| किसानों को उर्वरकों के वैज्ञानिक प्रयोग के बारे में भी जानकारी दी गई| इस क्षेत्र की काली लवणीय मृदाओं के लिए लवण सहिष्णु सरसों की किस्म की खेती करने के लिए किसानों को प्रोत्साहित किया गया तथा गेंहू के साथ संस्थान से विकसित लवण सहिष्णु सरसों की किस्म (सी एस 60) का बीज इच्छुक किसानों को दिया गया| किसानों को सरसों की वैज्ञानिक खेती के बारे में भी किसानों को बताया गया| डा. बिशवेश्वर गोरेन द्वारा लवणीय मृदा प्रबंधन, मिट्टी का नमूना लेने तथा मिट्टी में पोषक तत्वों का उचित प्रबंधन के बारे में किसानों को प्रशिक्षण दिया गया| अंत में किसानों ने वैज्ञानिकों से बातचीत की और खेती में आने वाली विभिन्न समस्याओं के बारे में पूछा। कार्यक्रम के दौरान संस्थान के तकनीकी अधिकारी चंपक तवियाड, दिनेश मीना तथा दिलीप वाघेला, उपस्थित रहे तथा अपना सहयोग प्रदान किया|

भारत सरकार की
अनुसूचित जाति उप-योजना के अंतर्गत